समकालीन लेखिकाओं के साहित्य में स्त्रीवाद

संपादक
डॉ. अमनदीप कौर

सानिया पब्लिकेशन
दिल्ली-110094

अनुक्रम

	सम्पादकीय	13
1.	समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्रीवाद : सामाजिक एवं पारिवारिक सन्दर्भ में **डॉ. अमनदीप कौर**	17
2	डॉ. माया दुबे की कविताओं में दार्शनिक चिंतन **डॉ. नरेश कुमार सिहाग**	27
3.	कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में नारीवाद **डॉ. गीतू खन्ना**	32
4.	समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्रीवाद **डॉ. शक्ति बुद्धिराजा**	45
5.	समकालीन प्रवासी लेखिकाओं के साहित्य में स्त्रीवाद **डॉ. अंजू बाला**	51
6.	समकालीन लेखिकाओं के नाटकों में स्त्रीवाद **डॉ. विजय वाघ**	56
7.	समकालीन हिन्दी लेखिकाओं के काव्य में स्त्रीवाद **डॉ. सिद्धेश्वर काश्यप**	63
8.	समकालीन हिंदी महिला उपन्यासों में चित्रित बदलती स्त्री दृष्टि- विवाह और प्रेम के सन्दर्भ में **डॉ. सलमी सेबास्टियन**	82
9.	समकालीन कहानियों में नारी अंतर्द्वन्द्व **डॉ. षेमी जॉन**	88
10.	समकालीन लेखिकाओं की आत्मकथाओं में स्त्रीवाद **आस्था कच्छप**	91
11.	हिन्दी में महिलाओं का नाट्य लेखन **डॉ. अनीश के.एन.**	95

समकालीन प्रवासी लेखिकाओं के साहित्य में स्त्रीवाद

डॉ. अंजू बाला
असिस्टेंट प्रोफेसर
गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, यमुनानगर-135001
anjubala573gmail.com
Mobile-9466327785

प्रवासी साहित्य आज समकालीन हिंदी साहित्य में अपनी महत्त्वपूर्ण स्थिति बना चुका है। यह आज के नवयुग का विमर्श है। पहले जो प्रवासी साहित्य उपलब्ध था, आज का प्रवासी साहित्य उस से एकदम अलग है। पिछले पांच-छ दशकों में नवीन तकनीकी और प्रौद्योगिकी चरम सीमा लांघती गई तो साहित्य भी जनप्रिय होता गया भारतीय मूल के लोग विदेशों में रहते हुए जो सृजनात्मक लेखन करते हैं, उसे ही प्रवासी साहित्य कहा जाता है।

वर्तमान समय में अनेक भारतीय अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, एशिया तथा अफ्रीका महाद्वीपों के भिन्न भिन्न देशों में प्रवास कर रहे है तथा इनमें से कुछ भारतीय हिंदी साहित्य की रचना तथा विकास में संलग्न हैं। प्रवासी हिंदी साहित्यकारों का स्थान महत्त्वपूर्ण इसलिए है कि इनकी रचनाओं में भिन्न-भिन्न देशों की भिन्न भिन्न संस्कृतियों तथा परिस्थितियों का वर्णन होता है। साथ ही साथ हिंदी साहित्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करता है।

प्रवासी साहित्य के अंतर्गत कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य, अनूदित काव्य, यात्रावर्णन आदि का सृजन हुआ है। हिंदी का प्रवासी साहित्य अत्यंत समृद्ध है। प्रवासी साहित्यकारों में सुधा ओम ढींगरा, उषा प्रियवंदा, उषा वर्मा, दिव्या माथुर, उषा राज सक्सेना, पुष्पा सक्सेना, अचला शर्मा, अनिल प्रभा कुमारी, सुषम बेदी, शैल अग्रवाल तथा सुदर्शन प्रियदर्शिनी के नाम प्रमुख हैं।

इन सभी साहित्यकारों की रचनाओं में विषय की विविधता है। इनके साहित्य में वृद्ध विमर्श, पुरुष विमर्श, स्त्री विमर्श तथा प्रवासी विमर्श आदि विषयों ने अपना स्थान बनाया है तथा भारतीय और पाश्चात्य समाज, संस्कृति, मानवीय संवेदनाएं तथा मनोविज्ञान आदि का बखूबी चित्रण हुआ है।

प्रवासी हिन्दी साहित्य में स्त्रीवादी चिन्तन की बात करें तो संसार के किसी भी कोने में स्त्री की क्षमता पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगा सकते लेकिन धर्म, समाज घर-परिवार या कार्यक्षेत्र की बात करें तो नारी की स्थिति संतोषजनक नहीं है। सभी धर्मों में स्त्री की स्थिति दोयम दर्जे की रही है।

अमेरिका में पिछले 25 वर्षों से रह रही सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'क्षितिज से परे' पाठक को यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि क्या औरत ही हमेशा त्याग की मूर्ति बनी रहे। कहानी की नायिका है--सारंगी। केवल 17 वर्ष की उम्र में वह जब विदेशी भूमि पर पैर रखती है तो पति उसे बेवकूफ शब्द से संबोधित करता है। परिवार के मोह के कारण सब सहन कर लेती है लेकिन अन्ततः पति को तलाक दे देती है।

अमेरिका की प्रसिद्ध कहानी लेखिका सुदर्शन प्रियदर्शिनी की कहानी 'धूप' में स्त्री के मन के अंतर्द्वन्द्व का चित्रण है। कहानी की नायिका रेखा जब अमेरिका की धरती पर कदम रखती है तो बहुत खुश है लेकिन समय बीतने के साथ साथ उसे महसूस होता है कि उसका पति बिल्कुल अमेरिकन बन चुका है और स्वार्थी भी। दूसरों के बनाये हुए साँचे में ढलने से पहले वह बहुत हिम्मत और विवेक से फैसला लेती है।

'क्षितिज से परे' की नायिका सारंगी को अपने पति सुलभ की तथा धूप कहानी की नायिका रेखा को अपने पति की संवेदनहीनता का आभास हो जाने पर तलाक जैसा फैसला लेना पड़ता है।

सुदर्शन प्रियदर्शिनी के उपन्यास 'भेज्यो न बिदेश' की नायिका रत्ती विभिन्न षड्यंत्रों से घिर कर अनेक समस्याओं से जूझती है लेकिन फिर भी पति परमेश्वर की भावना से अलग नहीं हो पाती। अपने साथ हुए धोखे के कारण पति प्रीतम से विमुख होने लगती है लेकिन प्रीतम के प्रति अनन्य प्रेम उसे फिर से वापस लौटने को विवश कर देता है।

प्रवासी कथा साहित्य में स्त्री के तीन रूप सामने आए हैं--एक तो जब वह पाश्चात्य परिवेश में पूरी तरह ढल जाए, दूसरा जब वह भारतीय और पाश्चात्य दोनों परिवेश में सामंजस्य बना ले और तीसरा जब वह निराशाजनक स्थिति में आ जाये।

नारी के पहले रूप का उदाहरण 'काला लिबास' कहानी में अनन्या की माँ पश्चिमी सभ्यता की स्वच्छंदता को इतना मूल्यवान समझने लगती है कि अपने बच्चों

की ओर कोई ध्यान नहीं देती कि उसके बच्चे पथभ्रष्ट हो जाते हैं। इसमें नारी का विकृत रूप सामने आता है। नारी के दूसरा रूप का उदाहरण 'हवन' कहानी की गुड्डो, 'आग में गर्मी कम क्यों है' की साक्षी तथा 'मेरे हिस्से की धूप' की शम्मो आदि जिन्होंने भारतीय तथा पाश्चात्य परिवेश में सामंजस्य बना कर आगे बढ़ने का प्रयास किया। तीसरे रूप में नारी या तो अवसादग्रस्त हो जाती है या फिर विद्रोही हो जाती है जैसे कि 'काला लिबास' कहानी की अनन्या, 'टारनेडो' कहानी की क्रिस्टी, 'हवन' कहानी की तनिमा आदि नायिकायें विद्रोही बन जाती हैं तथा 'न भेज्यो विदेश' की गुरमीत और 'सांकल' की सीमा अवसाद की स्थिति में चली जाती हैं।

उषा प्रियंवदा की रचना 'आधा शहर' की नायिका इला जो छोटी उम्र में घर से भाग जाती है क्योंकि वह स्वतंत्र होकर जीना चाहती है। वह ऐसा समाज चाहती है जिसमें पुरुषों की दखलंदाजी बिल्कुल ना हो। पढ़ी-लिखी होते हुए भी अपने निर्णय के कारण समाज में कलंकित हो जाती है।

शैल अग्रवाल की कहानी 'वापसी' की नायिका पम्मी अपने परिवार की खुशियों के लिए अपनी खुशियों और इच्छाओं का गला घोंट देती है। वह परिवार की मान -मर्यादा के लिए मिस रूथ को जवाब देती है (जब वह उसे हेमंत से शादी करने को कहती है) -

'जब लोगों को यह पता चलेगा कि शादी के बस तीन दिन पहले, मैंने किसी और से शादी कर ली, वह भी भागकर, मेरी छोटी बहन की शादी तो दूर बिरादरी में कहीं रिश्ता तक नहीं हो पाएगा। ना ना। नहीं, माफ करना मिस रूथ यह नहीं हो सकता।

लेकिन बाद में उसकी दादी उसकी वापसी के लिए सहर्ष सहमति दे देती है और अंतर्द्वंद्व में फंसी पम्मी अन्ततः हेमन्त के साथ जाने को तैयार हो जाती है।

दिव्या माथुर की कहानी 'फिर कभी सही' की नायिका नेहा आधुनिक सोच रखते हुए शादी किये बिना शादीशुदा बसंत के साथ वैवाहिक जीवन बिताती है। नेहा नहीं चाहती कि बसंत उसके सिवा किसी और का हो। जब उसे लगता है कि उसने भी तो बसंत को उसकी पत्नी दीप्ति से छीना है तो वह स्वयं को धिक्कारती है। यह कहानी त्रिकोण संबंधों पर आधारित कहानी है।

उषा वर्मा की कहानी 'सलमा' एक ऐसी भारतीय नारी के जीवन की कहानी है जो विवाह के बाद लंदन आ बसती है। अपने पति की उपेक्षा का शिकार होने के कारण आत्महत्या करने का सोचती है लेकिन शीघ्र ही सशक्त बनती है और पति को त्याग कर पुनर्विवाह के लिए अपने आप को तैयार कर लेती है।

ऊषा राजे सक्सेना की कहानी 'बीमा बी स्माट' में नारी की कर्मठता और दृढ़ संकल्प की ओर संकेत किया गया है। इस कहानी में एक शिक्षिका एक असामान्य

बच्चे को एक जिम्मेदार व सफल व्यक्ति बनाने के लिए बहुत मेहनत करती है।

एक ओर तो पुष्पा सक्सेना की कहानी कोई विकल्प नहीं में नारी की बुद्धिमत्ता के दर्शन होते हैं तो दूसरी ओर देह की कीमत कहानी में नारी का स्वार्थी रूप दिखाई देता है।

ऊषा प्रियवंदा का 'पचपन खम्बे लाल दीवारें' उपन्यास भी नारी जीवन के घुटन, टूटन और बिखराव पर आधारित है। नायिका सुषमा शिक्षित और नौकरीपेशा स्त्री है। उसके माता -पिता परिवार की सारी ज़िम्मेदारी उस पर डालकर निश्चिंत हो जाते हैं और समय पर उसकी शादी भी करनी है ये भी भुला दिया जाता है। नायिका की माता सुषमा कहती है-----

"सुषमा की शादी तो अब हमारे बस की बात नहीं रहिल इतना पढ़ लिख गई है... इसके जोड़ का लड़का मिलना तो मुश्किल ही है लड़की समाजी है, जिससे मन मिले उसी से कर ले हम खुशी खुशी शादी कर देंगे।"

उषा प्रियवंदा के उपन्यास 'शेष यात्रा' की नायिका अनु डॉ प्रणव की पत्नी बनकर अमेरिका आती है। वह अपने आपको डॉ पति के परिवार और रहन सहन के अनुसार ढाल लेती है। शीघ्र ही उसे यह एहसास होने लगता है कि वह वहाँ अकेली है। महत्त्वाकांक्षी और अस्थिर डॉ. उसे छोड़कर चला जाता है। नायिका अपने आप से कहती है--'अब प्रणव के बिना ज़िन्दगी काटनी होगी, सारी ज़िन्दगी।'

विवाह-विच्छेद की स्थिति आने पर किसी भी नारी का भीतर तक टूट जाना और अपने आप को समाप्त प्राय समझना स्वाभाविक सा ही है। ऐसे समय में घर परिवार और समाज के लोगों को चाहिए कि उस पर दोषारोपण करने की बजाय उसे मानसिक रूप से सहारा दें। हर नारी के भीतर एक असीमित शक्ति होती है। आवश्यकता है तो बस उसे अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर उसे जगाने की। ऐसा ही आत्मविश्वास अनु के भीतर जागा और उसने अपने जीवन की दशा और दिशा ही बदल दी। हर नारी को अपने आत्मसम्मान की रक्षा करनी चाहिए तथा किसी को भी अपना शोषण नहीं करने देना चाहिए। एक नारी की सबसे बड़ी ताकत है उसकी शिक्षा। उसी के बल पर वह आत्मनिर्भर बन सकती है। अपनी शिक्षा को पूर्ण कर तथा आत्मनिर्भर बन कर अनु ने अपने जीवन का रूप ही बदल दिया।

लेखिका ने नारी जीवन की निराशाओं, विडम्बनाओं तथा कठोर जीवन और स्वाभिमान का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है।

प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी कलम से स्त्री के संघर्ष, त्याग, साहस और बुद्धिमत्ता का ऐसा चित्र प्रस्तुत किया है जो समाज में बदलाव लाने में सहायक है। महिला साहित्यकार निरंतर अपनी लेखनी चलाते हुए स्त्री जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों को उजागर कर रही हैं। आज केवल भारतीय समाज को ही नहीं बल्कि विश्व

समाज को आवश्यकता है कि स्त्री एक नई शक्ति के रूप में खड़ी हो ताकि जाति का विकास हो और सम्पूर्ण विश्व के सम्मुख एक नवीन आदर्श की हो।

संदर्भ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य, डॉ. कमल किशोर गोयनका, प्रथम संस्करण 2011, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद
2. भेज्यो न बिदेश उपन्यास, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, नमन प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2013
3. पचपन खंभे लाल दीवारें, उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, 1987, नई दिल्ली
4. शेष यात्रा, ऊषा प्रियंवदा, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली
5. www.streekaa.com
6. www.streekaa.com